राजस्थान

अध्यापक पात्रता परीक्षा

REET

हिन्दी

सम्पूर्ण अध्ययन पुस्तक

अध्ययन सामग्री एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रधान संपादक
ए. के. महाजन
संपादन एवं संकलन
परीक्षा विशेषज्ञ समिति
कम्प्यूटर ग्राफिक्स
बालकृष्ण, चरन सिंह

संपादकीय कार्यालय
12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002 (उ. प्र.)
9415650134
Email : yctap12@gmail.com
website : www.yctbooks.com/www.yctfastbook.com/www.yctbooksprime.com
© All Rights Reserved with Publisher
प्रकाशन घोषणा
प्रधान सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने Printed by Digital से मुद्रित करवाकर, वाई.सी.टी. पब्लिकेशन्स प्रा. लि. 12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002 के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव एवं सहयोग सादर अपेक्षित है।

मूल्य : 495/-

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

विषय-सूची

हिन्दी भाषा

- हिन्दी वर्णमाला 4-9
- वाक्य रचना 10-20
- विराम चिह्न 21-25
- विलोम, समानार्थी, पर्यायवाची, एकार्थक-अनेकार्थक, तुकान्त-अतुकान्त 26-61
- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं विशेषण तथा भेद 62-73
- लिंग, वचन, कारक, काल, वाच्य 74-82
- उपसर्ग-प्रत्यय 83-90
- लोकोक्ति एवं मुहावरे 91-110
- संधि-समास 111-1124
- अलंकार एवं उसके भेद 125-130
- रचना-रचनाकार तथा विधाएँ 131-143
- अपठित 144-182

हिन्दी शिक्षण

- अधिगम और अर्जन 183-189
- भाषा अध्यापन के सिद्धान्त 190-202
- भाषा का कार्य 203-206
- विचारों का संप्रेषण (मौखिक और लिखित) 207-216
- भाषा अधिगम में व्याकरण की भूमिका 217-221
- भाषा कौशल 222-234
- भाषा बोधगम्यता एवं मूल्यांकन (बोलना, सुनना, पढ़ना, लिखना) 235-245
- अध्यापन अधिगम सामग्रियाँ 246-251
- उपचारात्मक अध्यापन 252-256

राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा (Level - I) SYLLABUS

हिन्दी

भाग-1 (कक्षा 1 से 5 तक) लेवल 1

इकाई-1 **05 अंक**

- एक अपठित गद्यांश में से निम्नलिखित व्याकरण सम्बन्धी प्रश्न शब्द ज्ञान, तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी शब्द। पर्यायवाची, विलोम, एकार्थी शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय।

इकाई-2 **05 अंक**

- एक अपठित गद्यांश में से निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रश्न–

रेखांकित शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना, वचन, काल, लिंग ज्ञात करना। दिये गये शब्दों का वचन काल और लिंग बदलना।

इकाई-3 **05 अंक**

- वाक्य रचना, वाक्य के अंग, वाक्य के प्रकार, पदबंध, मुहावरे और लोकोक्तियाँ।

इकाई-4 **05 अंक**

- भाषा की शिक्षण विधि, भाषा शिक्षण के उपागम, भाषा दक्षता का विकास।

इकाई-5 **05 अंक**

- भाषायी कौशलों का विकास (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) हिन्दी भाषा शिक्षण में चुनौतियाँ, शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठ्य पुस्तक, बहु-माध्यम एवं शिक्षण के अन्य संसाधन।

इकाई-6 **05 अंक**

- भाषा शिक्षण में मूल्यांकन, उपलब्धि परीक्षण का निर्माण समग्र एवं सतत् मूल्यांकन, उपचारात्मक शिक्षण।

भाग-2 (कक्षा 1 से 5 तक) लेवल 1

इकाई-1 **05 अंक**

- एक अपठित गद्यांश में से निम्नलिखित व्याकरण सम्बन्धी प्रश्न शब्द ज्ञान, तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी शब्द। पर्यायवाची, विलोम, एकार्थी शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, लिंग, वचन, काल।

इकाई-2 **05 अंक**

- एक अपठित गद्यांश में से निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रश्न–

भाव सौंदर्य, विचार सौंदर्य, नाद सौंदर्य, शिल्प सौंदर्य, जीवन दृष्टि।

इकाई-3 **05 अंक**

- वाक्य रचना, वाक्य के अंग, वाक्य के भेद, पदबंध, मुहावरे, लोकोक्तियाँ। कारक चिन्ह, अव्यय।

इकाई-4 **05 अंक**

- भाषा की शिक्षण विधि, भाषा शिक्षण के उपागम, भाषा दक्षता का विकास।

इकाई-5 **05 अंक**

- भाषायी कौशलों का विकास (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठ्य पुस्तक, बहु-माध्यम एवं शिक्षण के अन्य संसाधन।

इकाई-6 **05 अंक**

- भाषा शिक्षण में मूल्यांकन, (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) उपलब्धि परीक्षण का निर्माण समग्र एवं सतत् मूल्यांकन, उपचारात्मक शिक्षण।

01.

हिन्दी वर्णमाला

वर्ण-

वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है। वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिसको विभाजित नहीं किया जा सकता। वर्णों को अक्षर (जिसका क्षरण न हो) भी कहते हैं।

ध्वनि-

ध्वनि शब्दों की आधार शिला है, जिसके बिना शब्द की कल्पना नहीं की जा सकती। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ आदि जब मनुष्य की वागिन्द्रिय द्वारा व्यक्त होते हैं तब ये ध्वनियाँ कहलाती हैं। इसके लिखित रूप को 'वर्ण' कहते हैं।

⇒ ध्वनि को बोला और सुना जाता है जबकि वर्ण पढ़ा, लिखा और देखा जाता है।

⇒ भाषा की सार्थक इकाई वाक्य होती है। वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर तथा अक्षर से छोटी इकाई वर्ण होती है। जैसे- पानी शब्द में 2 अक्षर (पा और नी) और 4 वर्ण (प् + आ + न् + ई) हैं।

वर्णमाला-

वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	
क	ख	ग	घ	ङ		
च	छ	ज	झ	ञ		
ट	ठ	ड	ढ	ण		
त	थ	द	ध	न		
प	फ	ब	भ	म		
य	र	ल	व			
श	ष	स	ह			
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र			

हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले वर्णों की संख्या 52 है वर्णों का क्रमबद्ध समूह वर्णमाला कहलाता है। हिन्दी की लिपि देवनागरी लिपि है।

⇒ वर्णों की गणना दो आधार पर की जाती है-

देवनागरी लिपि में कुल 52 वर्ण हैं। इनका विवरण इस प्रकार है-

स्वर	-	11
स्पर्श व्यंजन	-	25
अन्तःस्थ	-	04
ऊष्म व्यंजन	-	04
संयुक्त व्यंजन	-	04
द्विगुण व्यंजन	-	02
अयोगवाह	-	02
कुल	=	52

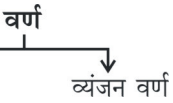

स्वर वर्ण- वे वर्ण जिनका उच्चारण बिना अवरोध के हो स्वर कहलाते है। इनके (स्वर के) उच्चारण में किसी दूसरे वर्णों की सहायता नहीं ली जाती। हिन्दी में स्वर वर्णों की संख्या ग्यारह है, जो इस प्रकार है-

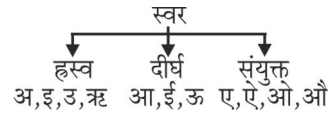

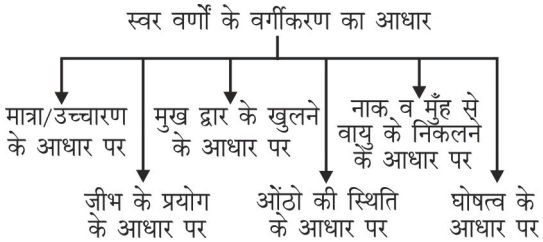

मात्रा- व्यंजनों के अनेक प्रकार के उच्चारणों को स्पष्ट करने के जब उनके साथ स्वर का योग होता है, तब स्वर का वास्तविक रूप जिस रूप में बदलता है, उसे मात्रा कहते है। मात्रा की संख्या 10 है। जैसे-

स्वर- आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

मात्रा- ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ

⇒ मात्रा उच्चारण के आधार पर स्वर को तीन भागों में विभाजित किया गया है-

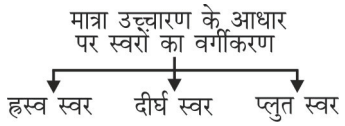

ह्रस्व स्वर या मूल स्वर- ऐसे स्वर जिनकी उत्पत्ति दूसरे स्वरों से नहीं होती, वे स्वर मूल या ह्रस्व या एकमात्रिक कहलाते हैं। इनके उच्चारण में कम समय लगता है।

जैसे- अ, इ, उ, ऋ

दीर्घ स्वर- समान ह्रस्व या मूल स्वर मिलकर दीर्घ स्वर बनते हैं; जैसे- आ (अ+अ), ई (इ+इ), ऊ (उ+उ), ए (अ+इ) ऐ (अ+उ), औ (अ+ओ) इनके उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगता है।

प्लुत- जिस स्वर के उच्चारण में तिगुना समय लगे, उसे प्लुत स्वर कहते है। इसके लिए तीन (३) का अंक लगाया जाता है; जैसे - ओ३म।

⇒ जीभ के प्रयोग के आधार पर स्वर वर्णों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है।

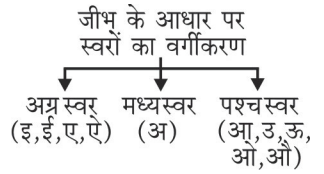

अग्रस्वर- जिन स्वरों के उच्चारण जीभ के अग्र भाग से होते हैं, अग्र स्वर कहलाते हैं; **जैसे**- इ, ई, ए, ऐ।

मध्यस्वर- जिन स्वरों के उच्चारण जीभ के मध्य भाग से होते है, मध्य स्वर कहलाता है; **जैसे-** अ।

पश्चस्वर - जिन स्वरों के उच्चारण जीभ के पश्च भाग से होता है, पश्च स्वर कहलाते हैं; **जैसे-** आ,उ,ऊ,ओ,औ।

⇒ मुख द्वार के खुलने के आधार पर स्वर वर्ण को तीन भागों में विभाजित किया गया है-

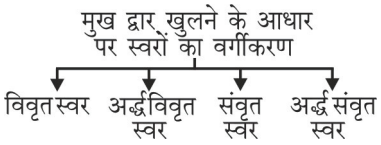

1. **विवृत स्वर-** जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार पूरा खुलता है विवृत स्वर कहलाते हैं; **जैसे-** आ।
2. **अर्द्ध विवृत स्वर-** जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार आधा खुलता है, अर्द्ध विवृत स्वर कहलाते हैं; **जैसे-** अ, ऐ, औ।
3. **संवृत स्वर-** जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार लगभग बंद रहता है, संवृत स्वर कहलाते हैं; **जैसे-** इ, ई, उ, ऊ।
4. **अर्द्ध संवृत स्वर-** जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार आधा बंद रहता है, अर्द्ध संवृत स्वर कहलाते हैं; **जैसे-** ए, ओ।

⇒ ओठ की स्थिति के आधार पर स्वर वर्ण को दो भागों में बाँटा गया है।

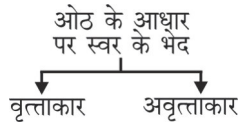

1. **वृत्ताकार-** जिन स्वरों के उच्चारण में ओष्ठ वृत्ताकार में हो जाते हैं, वे स्वर वृत्ताकार कहलाते हैं।
   जैसे- उ, ऊ, ओ, औ, ऑ।
2. **अवृत्ताकार-** जिन स्वरों के उच्चारण में ओठ वृत्ताकार न होकर फैले से रहते हैं वे स्वर अवृत्ताकार कहलाते हैं।
   जैसे- अ, आ, इ, ई, ए, ऐ।

⇒ नाक व मुँह से वायु के निकलने के आधार पर स्वर वर्ण को दो भागों में विभाजित किया गया है-

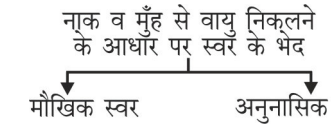

1. **मौखिक स्वर (निरनुनासिक स्वर)-** जिन स्वरों के उच्चारण में वायु केवल मुँह से निकलती है वे स्वर मौखिक स्वर या निरनुनासिक स्वर कहलाते हैं; **जैसे-** अ, आ, इ।
2. **अनुनासिक स्वर-** जिन स्वरों के उच्चारण में वायु मुँह के साथ नाक से भी बाहर आती है, वे स्वर अनुनासिक कहलाते हैं; **जैसे-** अँ, आँ, आदि।

⇒ अनुनासिक स्वर निरनुनासिक स्वरों के स्थान पर आकर शब्दों का अर्थ परिवर्तन कर देते है;

जैसे- सास - आ साँस- आँ

व्यंजन वर्ण

वे वर्ण जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, व्यंजन वर्ण कहलाते हैं। प्रत्येक व्यंजन के उच्चारण में 'अ' की ध्वनि छिपी रहती है। 'अ' के बिना व्यंजन का उच्चारण सम्भव नहीं है; **जैसे-** क्+अ= क, ख्+अ= ख।

⇒ हिन्दी में व्यंजनों की संख्या 33 है।

व्यंजन वर्ण			
प्रकार	**वर्ग**	**व्यंजन वर्ण**	**संख्या**
स्पर्श व्यंजन	क वर्ग	क,ख,ग,घ,ङ	25
	च वर्ग	च,छ,ज,झ,ञ	
	ट वर्ग	ट,ठ,ड,ढ,ण	
	त वर्ग	त,थ,द,ध,न	
	प वर्ग	प,फ,ब,भ,म	
अन्तःस्थ	य,र,ल,व		4
ऊष्म	श,ष,स,ह		4
कुल व्यंजन			33

विशेष- द्विगुण के अन्य नाम गौण व्यंजन, उत्क्षिप्त व्यंजन, नामित व्यंजन आदि हैं। ड़, ढ़ द्विगुण व्यंजन हैं। क्ष (क्+ष), त्र (त्+र), ज्ञ (ज्+ञ) तथा श्र (श्+र) संयुक्त व्यंजन (4) हैं।

⇒ व्यंजनों के तीन प्रकार है-

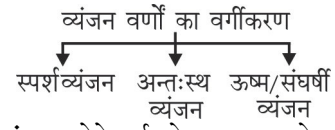

1. **स्पर्श व्यंजन-** ऐसे वर्ण जो उच्चारण करते समय कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त और ओष्ठ स्थानों से स्पर्श होते है, स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। स्पर्श व्यंजन को वर्गीय व्यंजन भी कहा जाता है।

स्पर्श व्यंजन		
वर्ग	**व्यंजन वर्ण**	**वर्णों की संख्या**
क वर्ग	क ख ग घ ङ	5
च वर्ग	च छ ज झ ञ	5
ट वर्ग	ट ठ ड ढ ण	5
त वर्ग	त थ द ध न	5
प वर्ग	प फ ब भ म	5
कुल		25

2. **अन्तःस्थ व्यंजन वर्ण-** ऐसे वर्ण जो जीभ, तालु, दाँत, ओष्ठ के परस्पर स्पर्श से उच्चारण किये जाय, अन्तःस्थ व्यंजन कहलाते हैं। अन्तःस्थ व्यंजन य,र,ल,व चार होते हैं।
   नोट- य, व को अर्द्धस्वर कहते हैं।

3. **ऊष्म व्यंजन-** ऐसे वर्ण जो किसी स्थान पर घर्षण करते हुए उच्चारित हों, ऊष्म व्यंजन कहलाते हैं। ऊष्म व्यंजन को संघर्षी व्यंजन भी कहते हैं। ऊष्म व्यंजन श, ष, स, ह चार होते हैं।

⇒ घोषत्व के आधार पर व्यंजनों को दो वर्गों में बाँटा गया है-

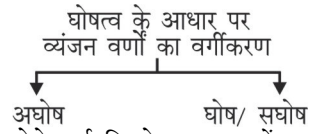

अघोष- ऐसे वर्ण जिनके उच्चारण में स्वरतन्त्रियाँ झंकृत न हो, अघोष कहलाते है। प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा वर्ण तथा श, ष, स अघोष वर्ण है।

अघोष व्यंजन वर्ण- क,ख,च,छ,ट,ठ,त,थ,प,फ,श,ष,स

सघोष/घोष- ऐसे वर्ण जिनके उच्चारण में स्वरतन्त्रियाँ झंकृत हो, घोष कहलाते है। प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, सारे स्वर वर्ण, य, र, ल, व अन्तःस्थ और ह घोष वर्ण हैं।

सघोष वर्ण- ग,घ,ङ,ज,झ,ञ,ड,ढ,ण,द,ध,न,ब,भ,म

(सभीस्वर)- अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ए,ऐ,ओ,औ

(अन्तःस्थ व्यंजन)- य,र,ल,व और ह

⇒ प्राणत्व के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण-

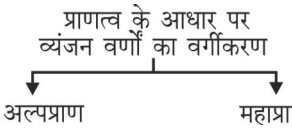

अल्पप्राण- ऐसे वर्ण जिनके उच्चारण में श्वास पुरव से अल्प मात्रा में निकले और 'हकार' की ध्वनि न हो, अल्पप्राण कहलाते है। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवा वर्ण और अन्तःस्थ वर्ण अल्पप्राण है।

अल्पप्राण वर्ण- क,ग,ङ,च,ज,ञ,ट,ड,ण,त,द,न,प,ब,म, य,र,ल,व (अन्तःस्थ)

महाप्राण- ऐसे वर्ण जिनके उच्चारण में श्वास अधिक मात्रा में निकले और 'हकार' की ध्वनि उत्पन्न हो, महाप्राण कहलाते है। प्रत्येक वर्ग का दूसरा, चौथा तथा समस्त ऊष्म वर्ण महाप्राण है।

महाप्राण वर्ण- ख,घ,छ,झ,ठ,ढ,थ,ध,फ,भ, और श,ष,स, ह (ऊष्म व्यंजन)

वर्णमाला

उच्चारण स्थान	अघोष			घोष							
	स्पर्श		ऊष्म	ऊष्म	स्पर्श					स्वर	
	अल्पप्राण	महाप्राण	महाप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण (अनुनासिक)	अंतःस्थ (अल्पप्राण)	ह्रस्व	दीर्घ	संयुक्त
कंठ	क	ख		ह	ग	घ	ङ		अ	आ	
तालु	च	छ	श		ज	झ	ञ	य	इ	ई	ए,ऐ
मूर्धा	ट	ठ	ष		ड	ढ	ण	र	ऋ		
दंत	त	थ	स		द	ध	न	ल			
ओष्ठ	प	फ			ब	भ	म	व	उ	ऊ	ओ,औ

वर्णों का उच्चारण स्थान	
वर्ण	**उच्चारण स्थान**
अं, ङ, ञ, ण, न, म	**नासिका** (नाक)
न, स, र, ल	**वर्त्स्य** या **दन्त मूल**
त वर्ग, स	**दन्त** (दाँत)
व	**दन्तोष्ठ्य** (दाँत + ओष्ठ)
उ, ऊ, प वर्ग	**ओष्ठ्य** (ओंठ)
ओ, औ, ऑ	**कंठोष्ठ्य** (कंठ + ओष्ठ)

ऋ, ट वर्ग, ष, र	**मूर्धा** (मुँह के भीतर के ऊपरी छत का अगला भाग)
इ, ई, च वर्ग, य, श	**तालव्य** (तालु द्वार- मुँह के भीतर की ऊपरी छत का अगला भाग)
ए, ऐ	**कंठतालव्य** (कंठ + तालु)
अ, आ, अः क वर्ग, ह विसर्ग	**कंठ्य** (कंठ + निचली जीभ)

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'श' ध्वनि का उच्चारण स्थान क्या है?

(a) दंत (b) मूर्द्धा

(c) तालु (d) दंतालु

UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017

उत्तर : (c)

2. ट वर्ग में किस प्रकार के व्यंजन हैं?

(a) कंठ्य (b) तालव्य

(c) मूर्धन्य (d) दन्त्य

UP TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2016

उत्तर : (c)

3. 'अर्ध-स्वर' है–

(a) य, व (b) इ, उ

(c) ऋ, ऌ (d) ऋ, ष

UP TET - Ist Paper (I-V) Dec. 2016

उत्तर : (a)

4. अयोगवाह कहा जाता है -

(a) विसर्ग को (b) महाप्राण को

(c) संयुक्त व्यंजन को (d) अल्पप्राण को

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2016

उत्तर : (a)

5. अयोगवाह कहा जाता है

(a) महाप्राण को (b) अनुस्वार एवं विसर्ग को

(c) संयुक्त व्यंजन को (d) अल्पप्राण को

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Oct. 2017

उत्तर : (b)

6. 'ङ' का उच्चारण स्थान होता है

(a) नासिक्य (b) कंठौठ्य

(c) मूर्धन्य (d) कंठतालव्य

UP TET - Ist Paper (I-V) Oct. 2017

उत्तर : (a)

7. 'घ' का उच्चारण स्थान कौन-सा है?

(a) मृर्द्धा (b) कण्ठ

(c) तालु (d) दन्त

UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013

उत्तर : (b)

8. 'क्ष' वर्ण किसके योग से बना है?

(a) क् + ष (b) क् + च

(c) क् + छ (d) क् + श

UP TET - Ist Paper (I-V) June 2013

उत्तर : (a)

9. निम्नलिखित में से 'दन्त्य' वर्ण है–

(a) ट् (b) च्

(c) त् (d) उ

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013

उत्तर : (c)

10. हिन्दी शब्दकोश में पहले आने वाला शब्द है -

(a) वक्त (b) वरक

(c) वक्र (d) वर्ग

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013

उत्तर : (a)

11. हिन्दी शब्दकोष में अं किस वर्ण से पहले आता है?

(a) औ (b) अ

(c) अः (d) आ

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) June 2013

उत्तर : (b)

12. कौन-सा व्यंजन 'त' वर्ग का नहीं है?

(a) न (b) म

(c) द (d) ध

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (b)

13. भिन्न-भिन्न स्वरों के मेल से जो स्वर उत्पन्न होता है उसे–

(a) संयुक्त स्वर (b) दीर्घ स्वर

(c) सन्धि स्वर (d) मूल स्वर

Chhattisgarh TET - IInd Paper (VI-VIII) 2011

उत्तर : (a)

14. कौन वर्ण घोष नहीं है?

(a) ए (b) छ

(c) अ (d) ड

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (b)

15. किस शब्द में 'ऋ' स्वर नहीं है?

(a) कृपा (b) कृष्ण

(c) दृष्टि (d) रिवाज

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (d)

16. किन ध्वनियों के 'अनुस्वार' कहा जाता है?

(a) स्वर के बाद आने वाली नासिक्य ध्वनियाँ

(b) स्वतन्त्र रूप से उच्चारित ध्वनियाँ

(c) स्वर के साथ आने वाली ध्वनियाँ

(d) व्यंजन के बाद में आने वाली ध्वनियाँ

Rajasthan TET - IInd Paper (VI-VIII) July 2011

उत्तर : (a)

17. 'थ' किस वर्ग का व्यंजन है?

(a) ओष्ठय (b) तालव्य

(c) दन्त्य (d) ऊष्म

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) April 2016

उत्तर : (c)

18. हिन्दी भाषा में वे ध्वनियाँ कौन-सी हैं जो स्वतन्त्र रूप से बोली या लिखी जाती है?

(a) स्वर (b) व्यंजन
(c) वर्ण (d) अक्षर

Uttarakhand TET - Ist Paper (I-V) Jan. 2011

उत्तर : (a)

19. 'तृ' की ध्वनियाँ हैं -

(a) त् + ऋ (b) त + र
(c) त् + ऋ + अ (d) त् + अ

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

20. निम्न में से सघोष वर्ण है -

(a) अ (b) क
(c) ख (d) च

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2011

उत्तर : (a)

21. शब्दकोष में निम्न में से सर्वप्रथम आने वाला शब्द है-

(a) प्याऊ (b) प्रकम्प
(c) प्लवन (d) प्रकीर्ण

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (a)

22. 'ज्ञ' को वर्णमाला में माना जाता है–

(a) संयुक्त व्यंजन (b) स्वर सन्धि
(c) अनुस्वार (d) व्यंजन

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (a)

23. निम्न में से कौन-सा वर्ण स्पर्श संघर्षी है?

(a) झ (b) श
(c) ट (d) ह

Haryana TET - IInd Paper (VI-VIII) Feb. 2014

उत्तर : (a)

24. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रकम्पित वर्ण है?

(a) र (b) ल
(c) य (d) व

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (a)

25. मुखावयवों के निकट आने से संघर्ष के पश्चात् प्रकट होने वाली ध्वनि कौन-सी है?

(a) स्पर्श (b) अंतस्थ
(c) वर्त्स्य (d) ऊष्म

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2015

उत्तर : (d)

26. 'ख' है–

(a) अघोष व्यंजन (b) अल्पप्राण व्यंजन
(c) घोष व्यंजन (d) विवृत

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (a)

27. ऊष्म महाप्राण वर्ण है –

(a) ख् (b) च्
(c) ट् (d) ष्

Haryana TET - Ist Paper (I-V) Feb. 2014

उत्तर : (d)

28. निम्न में से महाप्राण वर्ण है–

(a) आ (b) क
(c) थ (d) च

Haryana TET - Ist Paper (I-V) 2012

उत्तर : (c)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. शब्द की सबसे छोटी इकाई क्या कहलाती है?

(a) स्वर (b) वर्ण
(c) व्यंजन (d) अयोगवाह

2. हिन्दी भाषा की कुल वर्ण लिपियाँ हैं-

(a) 44 (b) 33
(c) 52 (d) 48

3. हिन्दी में ध्वनियाँ कितने प्रकार की होती हैं?

(a) 2 (b) 4
(c) 6 (d) 8

4. हिंदी वर्णमाला में स्वरों की संख्या ..... है। रिक्त स्थान की पूर्ति करें–

(a) 11 (b) 10
(c) 9 (d) 13

5. निम्नलिखित में से कौन-सा मूल दीर्घ स्वर नहीं है?

(a) आ (b) ई
(c) ऊ (d) ओ

6. मात्रा के आधार पर स्वर कितने प्रकार के होते हैं?

(a) 2 (b) 3
(c) 4 (d) 5

7. जिह्वा के आधार पर स्वर कितने प्रकार के होते हैं?

(a) 2 (b) 3
(c) 4 (d) 6

8. अर्द्ध विवृत स्वर है :

(a) ऊ (b) ऐ
(c) आ (d) ए

9. जिनकी ध्वनि केवल मुख से निकलती है, वे हैं :

(a) वृत्ताकार स्वर (b) संवृत स्वर
(c) अनुनासिक स्वर (d) निरनुनासिक स्वर

10. ओठों की आकृति के आधार पर निम्नलिखित में से कौन अवृत्तमुखी स्वर है?

(a) इ (b) ऊ
(c) ओ (d) उ

11. निम्न में ओष्ठ्य वर्ण कौन सा है?

(a) अ (b) आ

(c) इ (d) उ

12. किस शब्द में 'ऋ' स्वर नहीं है?

(a) कृपा (b) कृष्ण

(c) दृष्टि (d) आज

13. निम्नलिखित में से कौन से शब्द में अनुनासिकता नहीं है?

(a) संभावित (b) संभावना

(c) संभव (d) चारपाई

14. हिन्दी वर्णमाला में व्यंजनों की संख्या है-

(a) 32 (b) 34

(c) 33 (d) 36

15. निम्न में से दंत्य ध्वनि है–

(a) ख (b) च

(c) ल (d) फ

16. अन्तःस्थ और ऊष्म वर्ण कितने हैं :

(a) 6 (b) 8

(c) 9 (d) 7

17. दो व्यंजन जब एक साथ मिलते हैं तो क्या कहलाते हैं?

(a) संयुक्त व्यंजन (b) अल्पप्राण

(c) अन्तःस्थ (d) महाप्राण

18. हिन्दी वर्णमाला में कुल कितने अयोगवाह हैं?

(a) 2 (b) 5

(c) 3 (d) 4

19. निम्न में से कौन-सा व्यंजन संघर्षी है?

(a) ह (b) म

(c) झ (d) ठ

20. काकल्य वर्ण कौन-सा है?

(a) य (b) स

(c) ह (d) ण

21. 'र' का विवरण है :

(a) वर्त्स्य, लुंठित, सघोष, अल्पप्राण व्यंजन

(b) वर्त्स्य, पार्श्विक, सघोष, महाप्राण व्यंजन

(c) वर्त्स्य, संघर्षी, अघोष, अल्पप्राण व्यंजन

(d) वर्त्स्य, स्पर्श, सघोष, महाप्राण व्यंजन

22. निम्न में से कौन-सा व्यंजन पार्श्विक है?

(a) श (b) ल

(c) झ (d) य

23. निम्न में अर्द्धस्वर कहलाता है–

(a) य (b) प

(c) र (d) ल

24. स्पर्श व्यंजन, कंठ्य ध्वनि, अघोष और महाप्राण ध्वनि हैः

(a) क (b) ग

(c) ख (d) घ

25. अनुस्वार के संबंध में कौन-सा कथन उपयुक्त नहीं है?

(a) इसका उच्चारण आगे आने वाले व्यंजन से प्रभावित होता है

(b) अनुस्वार नासिक्य व्यंजन होता है

(c) इसे ं के रूप में दर्शाया जाता है

(d) इसे ँ के रूप में लिखा जाता है

26. लिखित भाषा में मूल ध्वनियों के लिए जो चिह्न मान लिए गए हैं तथा जिस रूप में ये लिखे जाते हैं उसे ..... कहते हैं।

(a) स्वर (b) लिपि

(c) ध्वनि कहते हैं (d) व्यंजन कहते हैं।

27. जब एक ही ध्वनि का द्वित्व हो जाए, तब वह क्या कहलाता है?

(a) संयुक्त ध्वनियाँ

(b) युग्मक ध्वनियाँ

(c) संपृक्त ध्वनियाँ

(d) पारस्परिक ध्वनियाँ

28 जिन शब्दों के अंत में 'अ' आता है, उन्हें क्या कहते हैं?

(a) अनुस्वार (b) अयोगवाह

(c) अंतःस्थ (d) अकारांत

29. हिन्दी शब्द कोष में सबसे पहले कौन शब्द आयेगा–

(a) ऋग्वेद

(b) ऋक्ष

(c) ऋणु

(d) ऋण

30. शब्दकोश में कौन-सा शब्द सबसे पहले आएगा?

(a) आँख (b) आग

(c) आकर (d) आँच

उत्तरमाला

1. (b)	**2. (c)**	**3. (a)**	**4. (a)**	**5. (d)**	**6. (b)**	**7. (b)**	**8. (b)**	**9. (d)**	**10. (a)**
11. (d)	**12. (d)**	**13. (d)**	**14. (c)**	**15. (c)**	**16. (b)**	**17. (a)**	**18. (a)**	**19. (a)**	**20. (c)**
21. (a)	**22. (b)**	**23. (a)**	**24. (c)**	**25. (c)**	**26. (b)**	**27. (b)**	**28. (d)**	**29. (b)**	**30. (a)**

02.

वाक्य रचना

वाक्य

मनुष्य के विचारों को पूर्णता से प्रकट करने वाले पद समूह को वाक्य कहते हैं। वाक्य सार्थक शब्दों का व्यवस्थित रूप है। वाक्य वह सार्थक शब्द समूह है जिसके द्वारा लेखक तथा वक्ता लिखकर एवं बोलकर अपने भाव या विचार पाठक या श्रोता पर प्रकट करता है।

वाक्य की विशेषता-

⇒ वाक्य में स्पष्टता होनी चाहिए।

⇒ पाठक या श्रोता के सोये भावों या विचारों को जागृति करने में समर्थ हों।

⇒ वाक्य में शब्दों व पदों की तारतम्यता होनी चाहिए।

⇒ व्यर्थ के पदों व शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

वाक्य के तत्त्व-

तत्त्व	विशेषता	उदाहरण
योग्यता	पदों के अर्थबोध का सामर्थ्य	सीता चम्मच से रोटी बनाती है। वाक्य में प्रयुक्त 'चम्मच' शब्द अर्थाभिव्यक्ति में अयोग्य है। इसके स्थान पर 'चिमटा' का प्रयोग होना चाहिए।
आकांक्षा	वाक्य के अर्थ को लेकर किसी प्रकार की जिज्ञासा न होना।	**साइकिल चला रहे हैं।** वाक्य में कर्त्ता अनुपस्थित है। उसे जानने की स्वाभाविक अकांक्षा है। यदि कर्त्ता के स्थान पर 'बच्चे' या अन्य कर्त्ता प्रयुक्त हो तो वाक्य पूर्ण होगा।
क्रम	वाक्य में प्रयुक्त पदों की उचित क्रम व्यवस्था हो। कर्त्ता + कर्म + क्रिया	**लेख मोहन लिखता है** पदों का उचित क्रम इस प्रकार होगा। मोहन लेख लिखता है। **(शुद्ध)**
आसक्ति या संनिधि	वाक्य के पदों में उचित दूरी हो।	मैं पुस्तक पढ़ता हूँ। **(पदों की अतिनिकटता)** मैं...पुस्तक... पढ़ता हूँ। **(पदों की अति दूरी)** मैं पुस्तक पढ़ता हूँ **(पदों की उचित दूरी)**
सार्थकता	वाक्य में प्रयुक्त शब्दों की सार्थकता	**पानी वानी पीओगे।** वाक्य में प्रयुक्त 'वानी' शब्द निरर्थक है। इसका प्रयोग उचित नहीं है।
अन्वय	वाक्य में लिंग, वचन, काल, कारक का क्रिया के साथ उचित मेल हो।	लड़के बाजार जाता है। **(अशुद्ध)** लड़के बाजार जाते हैं। **(शुद्ध)**

वाक्य के अंग

उद्देश्य — विधेय

उद्देश्य- वाक्य में जिसके विषय में कुछ बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। प्रायः वाक्य का 'कर्ता' ही वाक्य का उद्देश्य होता है। **जैसे-** राघव पढ़ता है। यहाँ राघव शब्द उद्देश्य है।

उद्देश्य के विभिन्न रूप-

वाक्यों में उद्देश्य संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियार्थक संज्ञा, वाक्यांश आदि के रूपों में आते हैः **जैसे-**

संज्ञा	मोहन किताब पढ़ता है।
सर्वनाम	तुम गाते हो।
विशेषण	मूर्ख व्यक्ति परेशान होता है।
क्रियार्थक संज्ञा	दौड़ना एक अच्छा व्यायाम है।
वाक्यांश	पराधीन रहना आलसियों का काम है।

उद्देश्य का विस्तार-

उद्देश्य की विशेषता बताने वाले शब्द या शब्द समूह को उद्देश्य का विस्तार कहते हैं। **जैसे-** लंबे लंबे बालों वाली लड़की अभी-अभी एक बच्चे के साथ दौड़ते हुए उधर गई।

उपर्युक्त वाक्य में 'लंबे लंबे बालों वाली एक लड़की' उद्देश्य का विस्तार है। इस वाक्य में 'लंबे लंबे बालों वाली एक' लड़की का विशेषण है।

⇒ उद्देश्य के विस्तार शब्द विशेषण, सम्बंधकारक, सार्वनामिक विशेषण, वाक्यांश आदि होते हैं।

विशेषण	महान लोग पूजनीय होते है।
संबंध कारक	राम के पिता बाजार जाते है।
सार्वनामिक विशेषण	वह लड़का रोता है।
वाक्यांश	अपने कार्य में लीन बालक बहुत अच्छे होते है।

विधेय- वाक्य में उद्देश्य (कर्ता) के विषय में जो कुछ कहा जाता है वह विधेय कहलाता है; **जैसे-** राघव पढ़ता है। 'पढ़ता है' विधेय है।

विधेय का विस्तार-विधेय का विस्तार कारक, क्रियाविशेषण, वाक्यांश, पूर्वकालिक क्रिया, क्रियाद्योतक कर्म के द्वारा किया जा सकता है; **जैसे-**

कारक	वह साइकिल से गया।
क्रिया विशेषण	मैं धीरे-धीरे पढ़ता हूँ।
वाक्यांश	मोहन आठ बजे के बाद ही घर जाता है।
पूर्वकालिक क्रिया	वह रोकर चला गया।
क्रिया द्योतक	गाड़ी पों-पों करती हुई निकल गयी।
कर्म	मैं मोहन से पुस्तक लेता हूँ।

वाक्य के भेद-

वाक्य के भेद → रचना के आधार पर
वाक्य के भेद → अर्थ के आधार पर

रचना के आधार पर वाक्य के भेद-

वाक्य के तीन भेद होते हैं-

रचना के आधार पर वाक्य के भेद → सरल वाक्य
रचना के आधार पर वाक्य के भेद → मिश्र/मिश्रित वाक्य
रचना के आधार पर वाक्य के भेद → संयुक्त वाक्य

1. **सरल वाक्य-** जिस वाक्य में एक मुख्य क्रिया होती है और एक कर्ता होता है, उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं। इसमें एक उद्देश्य और एक विधेय रहते है। **जैसे-** राघव गाता है।

   इस वाक्य में एक **उद्देश्य** (राघव) और क्रिया, **विधेय** (गाता है) है। अतः यह सरल वाक्य है।

2. **मिश्र/मिश्रित वाक्य-** जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य (प्रधान उपवाक्य) के अतिरिक्त उसके अधीन कोई अंग वाक्य (उप वाक्य) हो तो मिश्रित वाक्य कहलाता है; **जैसे-** मैं जानता हूँ कि तुम्हारे नम्बर अच्छे आयेंगे।

   इस वाक्य में 'मैं जानता हूँ' प्रधान वाक्य है और 'तुम्हारे नम्बर अच्छे आयेंगे,' आश्रित उपवाक्य है।

   नोट-

मिश्र वाक्य में उपवाक्य- कि, जिससे, जो- ज्यों-त्यों क्योंकि, चूँकि, यदि, यद्यपि, जहाँ, जब, ताकि इसलिए, अतएव, सो, तथापि, चाहे, अतः आदि जैसे अव्ययों से जुड़ते हैं।

उपवाक्य- ऐसा पद समूह जिसका अपना अर्थ हो, जो एक वाक्य का भाग हो और जिसमें उद्देश्य और विधेय हों उपवाक्य कहलाता है।

जैसे- राघव ने कहा कि वह गायेगा।
प्रधान वाक्य उपवाक्य

उपवाक्य के भेद- उपवाक्य के तीन भेद है-

उपवाक्य → संज्ञा उपवाक्य
उपवाक्य → विशेषण उपवाक्य
उपवाक्य → क्रिया विशेषण उपवाक्य

1. **संज्ञा उपवाक्य-** जो आश्रित उपवाक्य संज्ञा की तरह व्यवहृत हों, उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं। 'संज्ञा उपवाक्य कि' पहचान यह है कि इस उपवाक्य के पूर्व 'कि' होता है, जैसे-
   1. मोहन ने कहा कि मैं जाऊँगा।
   2. मैं नहीं जानता कि सीता कहाँ है।

   उपर्युक्त वाक्यों में 'मैं जाऊँगा' और 'सीता कहाँ है।' संज्ञा उपवाक्य है।

2. **विशेषण उपवाक्य-** जो आश्रित उपवाक्य विशेषण की तरह व्यवहृत हो उसे 'विशेषण उपवाक्य' कहते है। 'विशेषण उपवाक्य' के पूर्व 'जो','जैसा', 'जितना' इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है। **यथा**- मैंने केवल वह पुस्तक पढ़ा, जो पतली थी।

   जैसे- वह आदमी जो कल आया था आज भी आया हैं। यहाँ जो 'जो कल आया था' विशेषण उपवाक्य है।

3. **क्रिया विशेषण उपवाक्य-**

   जो उपवाक्य क्रियाविशेषण की तरह व्यवहृत हो उसे क्रियाविशेषण उपवाक्य कहते है, जैसे -
   1. जब पानी बरसता है, तब मेंढ़क बोलते हैं।
   2. ज्यों ही मै गया त्यो ही ट्रेन चली गयी।

   उपर्युक्त वाक्य में 'जब पानी बरसता है', ज्यों ही मैं गया' क्रिया विशेषण उपवाक्य है। क्रिया विशेषण उपवाक्य के पूर्व जब, जहाँ, जिधर, ज्यों, यद्यपि इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है। इसके द्वारा समय, स्थान, कारण, फल, उद्देश्य, फल, अवस्था, समानता मात्रा इत्यादि का बोध होता है।

संयुक्त वाक्य- जिस वाक्य में साधारण अथवा मिश्र वाक्यों का मेल संयोजक अव्यवों द्वारा होता है, उसे 'संयुक्त वाक्य' कहते है। 'संयुक्त वाक्य' उस वाक्य समूह को कहते है जिसमें दो या दो से अधिक सरल वाक्य अथवा मिश्र वाक्य अव्ययों द्वारा संयुक्त हो जैसे- मैं बाजार गया और मोहन आया। इस वाक्य में दो सरल वाक्य को जोड़ने वाला, संयोजक 'और' है।

नोट- संयुक्त वाक्यों में प्रत्येक वाक्य अपनी स्वतंत्र सत्ता बनाये रखता है, वह एक-दूसरे पर आश्रित नहीं होता केवल संयोजक अव्यय उन स्वतंत्र वाक्यों को जोड़ते है।

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद- अर्थ के अनुसार वाक्य के आठ भेद हैं।

संयुक्त वाक्य के प्रकार- संयुक्त वाक्य चार प्रकार के होते हैं

संयुक्त वाक्य → संयोजक
संयुक्त वाक्य → विभाजक या विरोध सूचक
संयुक्त वाक्य → विकल्प सूचक
संयुक्त वाक्य → परिणाम बोधक

संयोजक- जब एक साधारण वाक्य दूसरे साधारण या मिश्रित वाक्य से संयोजक अव्यय के द्वारा जुड़ा हो। **जैसे-**

1. मोहन पढ़ा **और** सीता लिखी।
2. रमेश गया **और** राधा आयी।
3. सोनू गया **और** मोनू ने डांस किया।

विभाजक- जब साधारण या मिश्र वाक्यों का परस्पर विरोध का संबंध रहता है।

जैसे- (i) विनोद परिश्रम तो बहुत किया पर पास नहीं हुआ।
(ii) राघव बहुत तेज कार्यालय तो गया पर पहुच नहीं पाया।

विकल्पसूचक- जब दो बातों में से किसी एक बात को स्वीकार करना होता है; जैसे-

(i) या तो स्कूल जाओ या काम करो।
(ii) या तो खेलों या पढ़ाई करो।
(iii) या तो गावों या नृत्य करो।

परिणाम बोधक- जब एक साधारण वाक्य दूसरे साधारण या मिश्र वाक्य का परिणाम बताता हो, **जैसे-**

(i) रास्ते में बहुत तेज धूप है इसलिए मैं नहीं आ सकता।
(ii) वृक्षारोपण नहीं हो रहा है इसलिए पर्यावरण दूषित हो रहा है।
(iii) अत्यधिक उमस के कारण आज बारिश हो सकती है।

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद
- विधिवाचक वाक्य
- निषेधवाचक वाक्य
- आज्ञावाचक वाक्य
- प्रश्नवाचक वाक्य
- विस्मयवाचक वाक्य
- सन्देहवाचक वाक्य
- इच्छावाचक वाक्य
- संकेतवाचक वाक्य

1. **विधिवाचक वाक्य-** ऐसे वाक्य जिससे किसी काम के होने या किसी के अस्तित्व का बोध हो, वह वाक्य विधिवाचक वाक्य कहलाता है। जैसे-
   (i) भारत मेरा देश है।
   (ii) रमेश गाना गाता है।
   (iii) राधा स्कूल जाती है।
   (iv) सोहन क्रिकेट खेलता है।
   (v) गौरव रामायण पढ़ता है।

⇒ विधिवाचक वाक्य को विधानवाचक वाक्य भी कहते हैं।

2. **निषेधवाचक वाक्य-** ऐसे वाक्य जिसमें किसी कार्य के निषेध का बोध होता है, निषेधवाचक वाक्य कहलाते हैं। **जैसे-**
   (i) मैं बाजार नहीं जाऊँगा
   (ii) राघव सही काम नहीं करता है।
   (iii) कंश सच्चाई के रास्ते पर नहीं चलता था।
   (iv) मोहन क्रिकेट नहीं खेलेगा।
   (v) सुमित्रा स्कूल नहीं आयेगी।

3. **आज्ञावाचक वाक्य-** ऐसे वाक्य जिससे किसी आज्ञा का बोध हो, आज्ञावाचक वाक्य कहलाते हैं; **जैसे-**
   (i) वहाँ जाकर बैठिये।
   (ii) तुम बाजार जाओं।
   (iii) कृपया शान्ति बनाये रखें
   (iv) तुम मेरे साथ चलों।
   (v) तुम गाओं।

4. **प्रश्नवाचक वाक्य-** ऐसे वाक्य जिससे किसी प्रकार के प्रश्न पूछे जाने का बोध हो, प्रश्नवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे-
   (i) तुम कहाँ जा रहे हो?
   (ii) क्या तुम पढ़ोगे?
   (iii) तुम किस कक्षा में पढ़ती हो?
   (iv) तुम क्या खाओगे?
   (v) सलीम कब आयेगा?

5. **विस्मयवाचक वाक्य-** ऐसे वाक्य जिससे किसी आश्चर्य दुःख या सुख का बोध हो, विस्मयवाचक वाक्य कहलाते हैं; **जैसे-**
   (i) अरे! तुम आ गये।
   (ii) शाबाश! तुम जीत गये।
   (iii) ओह! मैं फेल हो गया।
   (iv) बल्ले! हम पास हो गये।
   (v) अरे! मोहन गिर गया।

6. **सन्देहवाचक वाक्य-** ऐसे वाक्य जिससे किसी बात का सन्देह प्रकट हो, सन्देहवाचक वाक्य कहलाते है; **जैसे-**
   (i) वह चला गया होगा।
   (ii) मैंने सुना होगा।
   (iii) शायद वह आ जाये।
   (iv) संभवतः वह सुधर गया।
   (v) वह पढ़ लिया होगा।

7. **इच्छावाचक वाक्य-** ऐसे वाक्य जिससे किसी प्रकार की इच्छा या शुभकामना का बोध हो, इच्छावाचक वाक्य कहलाता हैं; **जैसे-**
   (i) तुम सफल हो।
   (ii) भगवान तुम्हें लंबी उम्र दें।
   (iii) तुम हमेशा खुश रहों।
   (iv) सदा सुहागन रहो।
   (v) तुम अपने कार्य में सफल रहो।

8. **संकेतवाचक वाक्य-** जहाँ एक वाक्य दूसरे की सम्भावना पर निर्भर हो, संकेतवाचक वाक्य कहलाता है; **जैसे-**
   (i) यदि तुम परिश्रम करोगे ते सफल हो जाओगे।
   (ii) अगर तुम ध्यान देते तो ऐस न होता।
   (iii) अगर तुम जल्दी उठोगे तो स्वस्थ्य रहोगे।
   (iv) पानी न बरसता तो धान सूख जाता।
   (v) यदि तुम आओगे तो मैं भी आऊँगा।

वाक्य अशुद्धि के सामान्य नियम

कर्ता और क्रिया का मेल

1. यदि वाक्य में एक ही लिंग, वचन और पुरुष के अनेक विभक्ति रहित कर्ता हों और अन्तिम कर्ता के पहले 'और' संयोजक आया हो, तो इन कर्ताओं की क्रिया अंतिम कर्त्ता लिंग के बहुवचन में होगी।
   जैसे- (i) सीता और मीना जाती है।
   (ii) रमेश, राघव और आनंद पढ़ते हैं।
2. यदि वाक्य में कर्ता विभक्ति रहित है तो उसकी क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होगें। **जैसे-**
   (i) सीता पुस्तक पढ़ती है।
   (ii) रमेश गीत गाता है।
3. यदि वाक्य में दो भिन्न लिंगों के कर्ता हों और दोनों द्वन्द्व समास के अनुसार प्रयुक्त हों, तो उनकी क्रिया बहुवचन में होगी, **जैसे-**
   (i) माता-पिता सो गये।
   (ii) नर-नारी गये।
   (iii) राजा-रानी आ गये।
   (iv) स्त्री-पुरुष बैठे हैं।
4. यदि वाक्य में दो भिन्न-भिन्न विभक्ति रहित एक वचन कर्ता हों और दोनों के बीच **'और'** संयोजक आये तो उनकी क्रिया पुंलिंग और बहुवचन में होगी; **जैसे-**
   (i) राधा और कृष्ण रास रचाते हैं।
   (ii) बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं।
   (iii) मोहन और राधिका बाजार जाते हैं।
5. यदि वाक्य में दोनों लिंगों और वचनों के अनेक कर्ता हों, तो क्रिया बहुवचन में होगी और उनका लिंग अन्तिम कर्ता के अनुसार होगा; **जैसे-**
   (i) एक लड़का, दो महिला और चार पुरुष आते हैं।
   (ii) एक गाय, दो बैल और बहुत से बकरी चरती हैं।
   (iii) एक शेर, दो भैंस और तीन हिरण जाते हैं।
6. यदि वाक्य में अनेक कर्ताओं के बीच विभाजक समुच्चय बोधक अव्यय या, अथवा, वा रहे तो क्रिया अन्तिम कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार होगी; **जैसे-**
   (i) मनीष का तीन बैल अथवा राघव की तीन गाय बिकेगी।
   (ii) हरि का एक चटाई या पाँच दरियाँ बिकेगी।
7. यदि उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष एक वाक्य में कर्ता बनकर आयें तो क्रिया उत्तमपुरुष के अनुसार होगी; **जैसे-**
   (i) तुम और मैं जाऊँगा।
   (ii) तुम हम और वह जायेंगे।
   (iii) मोहन, तुम और हम साथ-साथ स्कूल चलेंगे।

नोट- कामता प्रसाद गुरु का मत है कि वाक्य में पहले मध्यमपुरुष उसके बाद अन्य पुरुष और अन्त में उत्तम पुरुष का प्रयोग होता है। जैसे- तुम, वह और मैं खेलूँगा।

कर्म और क्रिया का मेल

1. यदि वाक्य में कर्ता 'ने' विभक्ति से युक्त हो और कर्म की 'को' विभक्ति न हो, तो उसकी क्रिया कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होगी। **जैसे-**
   (i) मोहन ने पुस्तक पढ़ी।
   (ii) उसने लड़ाई जीती।
   (iii) मोहन ने बात की।
   (iv) तुमने क्षमा माँगी।
2. यदि कर्ता और कर्म दोनों विभक्ति चिह्नों से युक्त हों तो क्रिया सदा एकवचन पुलिंग और अन्यपुरुष में होगी; **जैसे-**
   (i) मैंने कृष्ण को पुकारा।
   (ii) लड़कों ने खेल को ध्यान से देखा।
   (iii) तुमने पुस्तक को पढ़ा।
   (iv) सीता ने राम को देखा।
3. यदि एक ही लिंग, वचन के अनेक प्राणिवाचक विभक्ति रहित कर्म एक साथ आएँ, तो क्रिया उसी लिंग में बहुवचन में होगी; **जैसे-**
   (i) राघव ने घोड़ा और ऊँट खरीदे।
   (ii) उसने भैंस और गाय खरीदे।
4. यदि एक ही लिंग-वचन के अनेक प्राणिवाचक-अप्राणिवाचक विभक्ति रहित कर्म एक साथ एकवचन में आये तो क्रिया भी एकवचन में होगी; **जैसे-**
   (i) मैंने एक भैंस और एक गाय खरीदी।
   (ii) राघव ने एक पेन और एक पुस्तक खरीदी।
   (iii) रमेश ने एक गाड़ी और एक साइकिल खरीदी।
5. यदि वाक्य में भिन्न-भिन्न लिंग के अनेक प्रत्यय कर्म आये और वे **'और'** से जुड़े हों, तो क्रिया अन्तिम कर्म के लिंग और वचन में होगी; **जैसे-**
   (i) मैंने सेब और अमरूद खाया।
   (ii) तुमने सब्जी और रोटी खायी।

संज्ञा और सर्वनाम का मेल

1. वाक्य में लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार सर्वनाम उस संज्ञा का अनुसरण करता है, जिसके बदले उसका प्रयोग होता है; **जैसे-**
   (i) लड़कियाँ भी ये ही हैं।
   (ii) लड़के वे ही हैं।
2. यदि वाक्य में अनेक संज्ञाओं के स्थान पर एक ही सर्वनाम आये, तो वह बहुवचन में होगा; **जैसे-**
   1. रमेश और सुधाकर दिल्ली गये हैं तीन दिन बाद वे लौटेगे।

वाक्य अशुद्धि

वाक्य शुद्धि भाषा में अति आवश्यक है। वाक्य में अनुपयुक्त शब्दों से सही क्रम न होने से, लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम एवं क्रिया का प्रयोग उचित स्थान पर न होने से वाक्य अशुद्ध हो जाता है जो भाषा की रमणीयता को नष्ट करता है।

लिंग सम्बन्धी अशुद्धि

⇒ शारीर के अंगों के नाम पुलिंग होते हैं, **जैसे-** मुँह, दाँत, ओठ, पाँव, हाथ, मस्तक, बाल, नाखून इत्यादि।
उपवाद- कोहनी, कलाई, नाक, आँख, जीभ, बाँह, नस स्त्रीलिंग होते है।

⇒ द्रव पदार्थों के नाम पुंलिंग होते हैं; **जैसे-** पानी, घी, तेल, इत्र, सिरका, रायता, शर्बत, अर्क इत्यादि।
अपवाद- चाय, स्याही, शराब (स्त्रीलिंग)

⇒ नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; **जैसे-** गंगा, यमुना, महानदी, गोदावरी, सतलज, रावी, झेलम इत्यादि।
अपवाद- सिन्धु, ब्रह्मपुत्र पुल्लिंग हैं।

अशुद्ध	शुद्ध
रीता **खाता** है।	रीता **खाती** है।
मोहन पुस्तक **पढ़ती** है।	मोहन पुस्तक **पढ़ता** है।
एक गाय, दो घोड़े और बकरी मैंदान में चर **रहे** हैं।	एग गाय, दो घोड़े और एक बकरी मैदान में चर **रही** है।
तुमने उसे **देखी**।	तुमने उसे **देखा**।
हमने लड़ाई **जीता**।	हमने लड़ाई **जीती**।
तुमने क्षमा **माँगा**।	तुमने क्षमा **माँगी**।
शिक्षा प्रणाली **बदलना** चाहिए।	शिक्षा प्रणाली **बदलनी** चाहिए।
मोहन के दाँत **चमकती** है।	मोहन के दाँत **चमकते** हैं।
पानी **बहती** है।	पानी **बहता** हैं।

वर्तनीगत अशुद्धि

⇒ विभक्ति चिह्न सर्वनामों के अलावा शेष सभी शब्दों से अलग लिखे जाते हैं; **जैसे-** मोहन ने, सीता ने, राधा ने इत्यादि।

⇒ जहाँ 'श' एवं 'स' एक साथ प्रयुक्त होते हैं वहाँ 'श' पहले आयेगा एवं 'स' उसके बाद **जैसे-** शासन, प्रशंसा, शासक, नृशंस। इसी प्रकार 'श' एवं 'ष' एक साथ आने पर 'श' एवं 'ष' बाद में प्रयोग होगा। जैसे- शोषक, विशेष, शेष, वेशभूषा, विशेषण।

⇒ सम् उपसर्ग के बाद य,र,ल,व,श,स,ह आदि ध्वनि आये तो 'म' को हमेशा अनुस्वर (·) के रूप में लिखते हैं; **जैसे-** संयम, संवाद, संलग्न, संसर्ग, संहार, संरचना, संरक्षण आदि। इन्हें सम्यम, सम्वाद, सम्लग्न, सम्सर्ग, सम्हार, सम्रचना, सम्रक्षण लिखना अशुद्ध है।

अशुद्ध	शुद्ध
राघव **सीदा** जा रहा है	राघव **सीधा** जा रहा है।
सीता **पाठसाला** में पढ़ती है।	सीता **पाठशाला** में पढ़ती है।
रामायन की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की।	**रामायण** की रचना महिर्षि वाल्मीकि ने की।
दशरथ ने कैकेई को दो **बचन** दिये।	दशरथ ने कैकेई को दो **वचन** दिये।
बड़ो का **आर्शीवाद** लेना चाहिए।	बड़ों का **आशीर्वाद** लेना चाहिए।
तुमने **अती** कर दी।	तुमने **अति** कर दी।
मोहन **दूकान** खोला है।	मोहन **दुकान** खोला है।
बड़े पूज्यनीय होते है।	बड़े पूजनीय होते हैं।
साकेत के रचियता मैथिलिशरण गुप्त हैं।	साकेत के **रचयिता** मैथिली शरण गुप्त हैं।
मात-पिता की सेवा करनी चाहिए।	**माता-पिता** की सेवा करनी चाहिए।

वचन सम्बन्धी अशुद्धि

⇒ प्राण, लोग, दर्शन, आँसू, दाम, अक्षत इत्यादि शब्दों का प्रयोग हिन्दी में बहुवचन में होता है।

⇒ द्रव्यवाचक संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन में होता है; **जैसे-** सोना, पानी, तेल आदि।

⇒ प्रत्येक, हरएक का प्रयोग एकवचन में होता है।

⇒ आदरसूचक शब्दों का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है।

अशुद्ध	शुद्ध
प्रत्येक **व्यक्तियों** को पढ़ाओं	प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ाओ।
दशरथ के प्राण **चला गया**।	दशरथ के प्राण **चले गये**।
हरएक **चादरे** बिछा दों।	हरएक **चादर** बिछा दो।
आज मैंने हनुमान जी का दर्शन **किया।**	आज मैंने हनुमान जी **के** दर्शन किये।
मीना-रीता और स्वर्निमा गा रही **है।**	मीना, रीता और स्वर्निमा गा रही **हैं।**
यह मोहन **का** हस्ताक्षर है।	ये मोहन **के** हस्ताक्षर हैं।
रामचरितमानस की अनेक **विशेषता** हैं।	रामचरितमानस की अनेक **विशेषताएँ** हैं।
राघव **के** बहुत **से** धन चोरी हो **गये**	राघव **का** बहुत- **सा** धन चोरी हो **गया**।
फूल की माला गूँथो।	**फूलों** की माला गूँथो।
दो **सइकिल** खरीद लाओ।	दो **साइकिलें** खरीद लाओ

सर्वनाम संबन्धी अशुद्धि

⇒ जब सार्वनामिक शब्दों के साथ विभक्ति चिह्न हो तो उसे सर्वनाम में मिलाकर लिखा जाता है; **जैसे-** हमने, उसने, मुझसे, आपको, उसको, किसने आदि।

⇒ बहुवचन संज्ञा के साथ सर्वनाम भी बहुवचन का होता हैं।

⇒ सम्मानीय व आदरणीय शब्दों के स्थान पर बहुवचन सार्वनामिक शब्दों का प्रयोग होता है।

अशुद्ध	शुद्ध
मेरे को बात नहीं करनी है।	**मुझे** बात नहीं करनी है।
तुम **तुम्हारे** रास्ते जाओं।	तुम **अपने** रास्ते जाओं।
तुम **अपून को** नहीं जानते।	तुम **मुझे** नहीं जानते।
वह लोग बहुत अच्छे हैं।	**वे** लोग बहुत अच्छे हैं।
मैंने आम खाना है।	**मुझे** आम खाना है।
दूध में **कौन** गिर गया है?	दूध में **क्या** गिर गया है
क्या आया है?	**कौन** आया है?
आप **आपका** काम करें।	आप **अपना** काम करें।
तेरे को अब पढ़ना चाहिए	**तुमको** अब पढ़ना चाहिए
यह किताबें बहुत मँहगी है	**ये** किताबे बहुत मँहगी है।

विशेषण सम्बन्धी अशुद्धि

⇒ विशेषण को वाक्य में साधारणतः विशेष्य के पहले रखना चाहिए। **जैसे-** अच्छे लड़के बड़ों का सम्मान करते हैं।

⇒ यदि विशेषण विधेय के रूप में आये तो वह विशेष्य के बाद रखा जाता है। **जैसे-** मोहन बहुत सुन्दर है।

⇒ कुछ विशेषण हर समय एक समान ही प्रयोग होते हैं, उनमे लिंग वचन का प्रभाव नहीं पड़ता। **जैसे-** सुन्दर, सरल, सुशील आदि।

⇒ वाक्य में कर्ता (संज्ञा) के अनुसार ही विशेषण का प्रयोग करना चाहिए। **जैसे-** (i) मोहन काला है। (ii) राधिका काली है।

अशुद्ध	शुद्ध
रीता **काला** है।	रीता **काली** है
मानव का समाज से **घोर** सम्बन्ध है।	मानव का समाज से **घनिष्ठ** सम्बन्ध है।
वह **बड़ी** तेज दौड़ता है।	वह **बहुत** तेज दौड़ता है।
हमारी **सौभग्यवती** कन्या का विवाह है।	हमारी **आयुष्मती** कन्या का विवाह है।
उसको सुधारना बहुत **गहरी** समस्या है।	उसको सुधारना बहुत **गंभीर** समस्या है।
इस **नीरस** जंगल में।	इस **वीरान** जंगल में।
ये महिलाएँ **गुणवान** हैं।	ये महिलाएँ **गुणवती** हैं।
ये बच्चे **अच्छा** है।	ये बच्चे **अच्छे** हैं।
वह पेड़ **महीन** है।	वह पेड़ **पतला** है।
हमारे देश की दयनीय **दुर्दश** है।	हमारे देश की दयनीय **हालत** है।
यह **सबसे सुन्दरतम** नायिका है।	यह **सुन्दरतम** नायिका है।

क्रिया संबंधी अशुद्धि

⇒ वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्ता के लिंग एवं वचन के अनुसार किया जाता है अन्यथा वाक्य अशुद्ध समझा जाता है।

अशुद्ध	शुद्ध
राम और सीता वन को **गई**।	राम आर सीता वन को **गए**।
सीता मुम्बई से वापस **आयी** है।	सीता मुम्बई से वापस **आई** है।
मैंने दान **दिया।**	मैंने दान **किया।**
राघव पगड़ी **ओढ़कर** बाजार चला गया।	राघव पगड़ी **बाँधकर** बाजार चला गया
तुम्हारा यह कहना मेरे लिए बड़ी बात **होगा।**	तुम्हारा यह कहना मेरे लिए बड़ी बात **होगी**।
वहाँ घना अँधेरा **घिरा** था।	वहाँ घना अँधेरा **छाया** है
एक बकरी, दो गायें और तीन बैल **चरता** है।	एक बकरी, दो गायें और तीन बैल **चरतें** है।
वह राम को **लजाता** है।	वह राम को **लजवाता** है।
राघव ने माला **गूँध** ली।	राघव ने माला **गूँथ** ली।
वे जा **रहा** है।	वे जो **रहे** हैं।

परसर्ग/विभक्ति चिह्न संबंधी अशुद्धि

⇒ विभक्ति शब्दों का काम शब्दों का संबंध दिखाना है इसलिए इनका अर्थ नहीं होता; **जैसे-** ने, की, को, से आदि।

⇒ हिन्दी की विभक्तियाँ विशेष रूप से सर्वनामों के साथ प्रयुक्त होने पर प्रायः विकार उत्पन्न कर उनसे मिल जाती है; **जैसे**- मेरा, हमारा, उसे उन्हे।

⇒ विभक्तियाँ प्रायः संज्ञाओं या सर्वनामों के साथ आती हैं; **जैसे-** सुनीता की दूकान से यह चीज लायी है।

अशुद्ध	शुद्ध
हमने यह काम करना है।	**हमे** यह काम करना है।
सब **से** नमस्ते।	सब **को** नमस्ते।
जनता **के** असंतोष फैल गया।	जनता **में** असंतोष फैल गया।
नौकर **का** कमीज।	नौकर **की** कमीज।
मैंने नहीं जाना।	**मुझे** नहीं जाना।
मैंने रहीम **को** पूछा।	मैंने रहीम **से** पूछा।
मोहन घर नहीं है।	मोहन घर **पर** नहीं है।
बारह बजने **को** पन्द्रह मिनट हैं।	बारह बजने **में** पन्द्रह मिनट है।
मैंने राम **को** रुपये लिये।	मैंने राम **से** रुपये लिये।
उसने **मेरे** को दस रुपये दिये।	उसने **मुझे** दस रुपये दिया।

पुनरुक्ति संबंधी पद अशुद्धि

जहाँ किसी शब्द से किसी अर्थ की प्रतीति हो जाने पर उसी अर्थ वाले शब्द का दुबारा प्रयोग किया गया हो वहाँ पुनरुक्ति दोष होता है।

अशुद्ध	शुद्ध
मोहन **प्रातःकाल** के **समय** घूमने जाता है।	मोहन **प्रातःकाल** घूमने जाता है।
कुत्ते सायंकाल **के समय** भौकते है।	कुत्ते सायंकाल भौकते हैं।
नौजवान युवकों पर भारत का भविष्य है।	**नौजवानों** पर भारत का भविष्य है।
पृथ्वी का **अधिक से अधिक** भाग जलीय है।	पृथ्वी का **अधिकांश** भाग जलीय है।
मध्यकालीन युग में स्थापत्य कला का बहुत विकास हुआ।	**मध्यकाल** में स्थापत्य कला का बहुत विकास हुआ।
वे **परस्पर एक दूसरे से** वर्तालाप करते हैं।	वे **परस्पर** वार्तालाप करते हैं।
राजा ने चोर को **मृत्युदण्ड की सजा** दिया।	राजा ने चोर को **मृत्युदण्ड** दिया।
भक्तियुग का **काल** स्वर्णयुग माना जाता है।	भक्ति काल **स्वर्णयुग** माना जाता है।
गाँव में **केवल मात्र** एक बरगद है।	गाँव में मात्र एक बरगद है।
कृपया हमारे घर पधारने की कृपा करें।	हमारे घर-पधारने की कृपा करें।

अधिकपदत्व संबंधी अशुद्धि

⇒ वाक्य में अनावश्यक पदों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

⇒ अनावश्यक पदों से भाषा के सौन्दर्य का ह्रास होता है।

अशुद्ध	शुद्ध
रहीम कक्षा में **सबसे** सुन्दरतम है।	रहीम कक्षा में सुन्दरतम है।
आज **ठण्डी** बर्फ मँगवानी चाहिए।	आज बर्फ मँगवानी चाहिए।
कुत्ता **एक स्वामिभक्त** जानवर है।	कुत्ता स्वामिभक्त जानवर है।
वह **जल से** पौधों को सीच रहा है।	वह पौधों को सीच रहा है।
यह **पुष्प का** पराग बहुत सुन्दर है।	यह पराग बहुत सुन्दर है।
मनुष्य संसार का **सबसे** उत्कृष्टम प्राणी है।	मनुष्य संसार का उत्कृष्टतम प्राणी है।
आज **बादल से** तेज बारिश हो रही है।	आज तेज बारिश हो रही है।
सुरेश, **पिता, राघवेन्द्र** का पुत्र है।	सुरेश, राघवेन्द्र का पुत्र है।
वह **पैर से** पैदल चलता है।	वह पैदल चलता है।

असंगत पद

⇒ वाक्य में प्रयुक्त शब्द संगत अर्थ प्रदान करने वाले होने चाहिए। 'हार' एवं 'माला' समानार्थी शब्द है इसका प्रयोग द्रटष्य है-

युद्ध में उसे माला मिली। (अशुद्ध)

युद्ध में उसे हार मिली। (शुद्ध)

अशुद्ध	शुद्ध
इस समय रमेश की **आयु** कितनी है?	इस समय रमेश की **उम्र** कितनी है?
पार्थ गाने की **कसरत** कर रहा हैं।	पार्थ गाने का **रियाज** कर रहा है।
छात्रों ने मालवीय जी को अभिनन्दन पत्र **प्रदान** किया।	छात्रों ने मालवीय जी को अभिनन्दन पत्र **अर्पित** किया।
मुझे **शोक** है कि मैं आन सका।	मुझे **खेद** है कि मैं आ न सका।
दो मित्रों के झगड़े का **हेतु** क्या हो सकता है?	दो मित्रों के झगड़े का **कारण** क्या हो सकता है?
रहीम स्कूल से **भागता** हुआ आया।	रहीम स्कूल से **दौड़ता** हुआ आया।
भरत राम की 14 वर्षों तक प्रतीक्षा **देखी।**	भरत राम की 14 वर्षों तक प्रतीक्षा **की।**
आज प्रयागराज में काफी **सरगर्मी** दृष्टिगोचर हो रही है।	आज प्रयागराज में काफी **गर्मी** दिखायी देती है।
लोग **चहक** रहे है।	लोग **गा** रहे हैं।
तलवार एक धारदार **अस्त्र** है।	तलवार एक धारदार **शस्त्र** है।

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. वाक्य शुद्ध है–

(a) मोहन और गीता गा रही है
(b) गीता और मोहन गा रहा है
(c) मोहन और गीता गा रहे हैं
(d) मोहन और गीता गा रही हैं

उत्तर : (c)

2. पिता ने समझाया कि सदा सत्य बोलना चाहिए। यह वाक्य उदाहरण है–

(a) सरल वाक्य का (b) इच्छावाचक वाक्य का
(c) मिश्र वाक्य का (d) आज्ञावाचक वाक्य का

उत्तर : (c)

3. शुद्ध वाक्य है–

(a) राम ने एक थैला और दो पुस्तकें खरीदा
(b) राम ने एक थैला और दो पुस्तकें खरीदी
(c) राम ने एक थैला और दो पुस्तकें खरीद लिया
(d) राम ने एक थैला और दो पुस्तक खरीदे

UP TET - IInd Paper (VI-VIII) Dec. 2016

उत्तर : (b)